Name- Divya Kumari

Mob No- 6201212245

Niso No- 450093192009

J.M Institute of Speech & Hearing

सुभाष चंद्र बोस

सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को ओड़िसा के कटक में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती प्रभावती देवी और पिता का नाम जानकीनाथ बोस था इनके पिता जानकीनाथ उस समय के एक प्रसीद्ध वकील थे सुभाष चंद्र बोस को देशभक्ती अपने पिता से विरासत के रूप में मिली थी सुभाष चंद्र बोस की माता प्रभावती देवी उतरी कलकता के परपराबादी दत परिवार के बेटी थी थे बहुत ही दृढ इच्छाशक्त की स्वामिनी समझदार और व्यवहार कुशल स्त्री थी सुभाष चंद्र बोस बचपन से पढाई लिखाई में काफी होनहार थे उन्होने अपनी प्राइमरी की पढाई कटक के प्रोटेस्टेंक स्कूल से पूरी की और 1909 में उन्होने रेवेनशा को लोजियेट स्कूल मे एडमीशन ले लिया। सुभाष चंद्र बोस स्वामीं विवेकानंद के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित थे उन्होने स्वामी विवेकानंद जी के साहित्य अध्ययन कर लिया था पढाई के प्रति अपने मेहनत और लगन सुभाष चंद्र बोस ने मैट्रिक परीक्षा में दूसरा स्थान हासिल किया था, 1911 में सुभाष चंद्र बोस ने प्रेसीडेसी कॉलेज में एडमिरान लिया लेकिन बाद मे अध्यापकों और छात्रो के बीच भारत बिरोधी टिप्पणियों को लेकर झगडा हो गया जीसके बाद सुभाष चंद्र बोस ने छात्रो का

साथ दिया उन्हे एक साल के लिए कॉलेज से निक
दिया गया और परीक्षा नही देने दिया सुभाष चंद्र बोस
1918 मे कलकता विश्वविधालय के स्कॉटिश कॉलेज
से दर्शन शास्त्र मे बी. ए की डीग्री प्राप्त की फिर
सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय सिविल सेवा परीक्षा (ICS)
मे शामिल होने के लिए कैम्ब्रिज के फिटजविल्लियम
कॉलेज मे एडमिशन लिया। वे अपने पिता जानकीनाथ
की इच्छा पूरी करने के लिए सुभाष चंद्र बोस ने चौथे
स्थान के साथ परीक्षा उतीर्ण की और सिविल सेवा विभाग
मे नौकरी हासिल की लेकिन उन्होने लंबे समय तक इस
नौकरी को नही कर पाए क्योंकि उनके लिए ये
नौकरी मानो किसी ब्रिटिश सरकार के अंदर काम करने
जैसी थी और उस नौकरी को छोड़ भारत वापसा आ
गए। वही सुभाष चंद्र बोस के अंदर बचपन से ही
देश प्रेम की भावना थी इसलिए वे स्वतंत्रता संग्राम
मे योगदान देने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मे
शामिल हो गए सुभाष चंद्र बोस कांग्रेस पार्टी के
महासचिव के पदं का सुरक्षीत कर लिया और गुलाम
भारत को अंग्रेजा के चंगुल से अजाद कराने की लड़ाई
मे भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल
नेहरन के साथ काम करना शुरू कर दिया। कुछ ही
सालो मे लोगों के बीच अपनी एक अलग छवि बना
ली थी इसके साथ ही वे एक नौजवान सोच
लेकर आए थे जिसके चलते वे यूथ लीडर के रूप
मे लोगो के प्रिय और राष्ट्रीय नेता भी बन गए
1939 का वार्षिक कोग्रेस अधिवेशन त्रिपुरी में हुआ
इस अधिवेशन में बीमारी की वजह से वह शामिल

नही हो सके। इसके बाद 29 अप्रैल 1939 को सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दीया। कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के बाद सुभाष चंद्र बोस ने 22 जून 1939 को फॉरवर्ड ब्लॉक को गठन किया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, सुभाष चन्द्र बोस ने कांग्रेस नेतृत्व से बिना सलाह लिए बिना भारत की तरफ से युद्ध करने के लिए वाइसराय लॉर्ड लिनलिथगो के विरोध में सामूहिक नागरिक अवज्ञा की वकालत की। उनके इस फैसले की वजह से उन्हें 7 दिन की जेल की सजा काटनी पड़ी और 40 दिन तक गृह गिरफ्तारी झेलनी पड़ी थी। 1944 में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस अपने भाषण से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया इसके साथ ही उनके इस भाषण ने उस समय काफी सुर्खियां भी बटोरी थी आपको बता दें कि नेता जी ने अपने इस प्रेरक भाषण में लोगों से कहा कि - "तुम मुझे खून दो, मै तुम्हें आजादी दूंगा" नेताजी सुभाष चंन्द्र बोस का भाषण का लोगों पर इतना प्रभाव पड़ा कि काफी तादाद में लोग ब्रिट्रिश शासकों के खिलाफ आजादी की लड़ाई में शामिल हो गए। सेना, आजाद हिंद फौज के मुख्य कमांडर नेताजी के साथ, ब्रिटिश राज से देश को मुक्त करने के लिए भारत की तरफ बढ़ी। रास्ते में अंडमान और निकोबार द्वीपों को स्वतंत्र किया गया। इसके बाद इन दो द्वीपों का स्वराज और शहीद का नाम दिया गया। इसके साथ सेना के लिए रंगून नया आधार शिविर बन गया। बर्मा मोर्चे पर अपनी पहली प्रतिबद्धता के साथ, सेना ने अंग्रेजों के खिलाफ प्रतिस्पर्धी लड़ाई लड़ी और आखिरकार

इम्फाल, मणिपुर के मैदान पर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराने में कामयाब रहे। हालांकि, राष्ट्रमंडल बलों के अचानक हमले में जापानी और जर्मन सेना को आश्चर्यचकित कर लिया। रंगून बेस शिविर के पीछे हटने से सुभाष चन्द्र बोस का राजनीतिक हिन्द फौज का को प्रभावी राजनीतिक इकाई बनने के सपने को चूर-चूर कर दिया।

Divya Kumavi